पुराने समय के दो शहर

प्रकाश कान्त

इतिहास में मनुष्य का एक जगह बसना भी कई कारणों, ज़रूरतों और सहूलियतों के कारण सम्भव हो पाया। गुफाएँ, नदी किनारे की छोटी झोपड़ियाँ, छोटी बस्तियाँ, छोटे गाँव, बड़े गाँव, नगर और महानगर! मनुष्य के एक जगह बसते जाने की यात्रा! पाठों में अलग-अलग जगह आए ब्यौरों व चित्रों के माध्यम से इस यात्रा के विविध चरणों को मैंने समझाने का प्रयास किया। गाँव के बसने की शुरुआत के बारे में बच्चों ने कक्षा छठी में जाना-समझा था। सातवीं में आकर 'गाँव-ही-गाँव, खेत-ही-खेत' पाठ में इसे और विस्तार से समझा। नए-पुराने शहरों के बारे में इसी क्रम में वे जानते गए। इसी तरह छठी कक्षा के चुने या नियुक्त किए राजा से लेकर आठवीं कक्षा में आए सम्राटों, सुल्तानों, बादशाहों के बारे में चर्चा करते वक्त मैंने इनमें निहित सत्ता में आ रहे परिवर्तनों को भी स्पष्ट करना चाहा। साथ ही, राजवंशों के बनने की प्रक्रिया के बारे में भी!

इतिहास के स्रोत

मैंने प्रशिक्षणों के समय भी गौर किया था और पढ़ाते वक्त भी देखा कि इतिहास के पाठ विभिन्न कालखण्डों की बात करते हुए यह भी बताते थे कि उनके बारे में जानकारियाँ इतिहास जानने के किन माध्यमों से हासिल हुई थीं। खुदाई में मिले सिक्के, बरतन, मूर्तियाँ, इमारतों के अवशेष, पुरानी किताबें वगैरह! सातवीं में बच्चों को एक पाठ ऐसा भी पढ़ने को मिला जिसमें एक पुराने गाँव के बारे में जानकारियाँ उस गाँव के पुराने मन्दिर की दीवारों पर खुदी घटनाओं के आधार पर मिली थीं। उस गाँव में घटित होने वाली हर महत्वपूर्ण घटना को मन्दिर की दीवार पर अंकित कर दिया जाता था। बच्चों के साथ-साथ यह चीज़ मेरे लिए भी नई थी। पहले कभी कल्पना नहीं की थी कि कोई गाँव कभी अपने बिलकुल ताज़ा इतिहास को इस तरह से गाँव की सबसे पवित्र मानी जाने वाली जगह पर संरक्षित करता होगा! मैं यह बात भी समझ रहा था कि इतिहास के ये पाठ बच्चों में इस बात की आदत डालना चाहते हैं कि वे अपने आसपास की चीज़ों को किस तरह से देखें। साँची के स्तूप के आसपास बनी रेलिंग के ज़रिए यह बात थोड़ी साफ तौर पर समझायी जा सकी। उन्होंने देखा कि शुरू-शुरू में लकड़ी के मकान बनाने में जिस

उस पुराने समय के किसानों ने भी अपने अनुभव से अपने यहां की ज़मीन के अनुसार सिंचाई की विधियां ढूंढ ली थीं।

पानी खींचने के यंत्र

किसानों ने कुओं से पानी खींचने के तरीके भी ढूंढे। इसके लिए किसानों ने तरह-तरह के यंत्र बनाए। सबसे पहले शायद ढेंकली का उपयोग हुआ।

ढेंकली से पानी कैसे उठाया जाता है चित्र-4 से समझो।

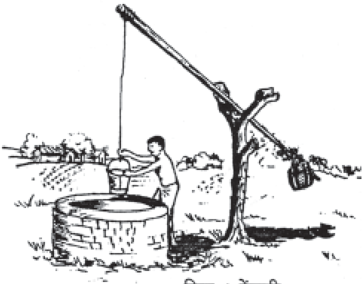

चित्र-4 ढेंकली

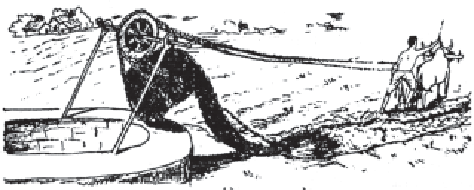

चित्र - 5 मोठ

फिर बैलों को जोतकर मोठ से पानी खींचा जाने लगा।

क्या तुम्हारे यहां ढेंकली और मोठ का उपयोग हुआ करता था? पता करो।

पुराने समय में तो ये ही सिंचाई के यंत्र थे। लोग लगातार बेहतर यंत्र बनाने की कोशिश करते रहे। एक नया यंत्र बना अरघट्ट।

अरघट्ट से पानी कैसे खींचा जाता था चित्र-6 देख कर समझो।

क्या तुम्हारे आसपास इस यंत्र का उपयोग होता था? इसे तुम्हारे क्षेत्र में क्या कहा जाता था?

सिंचाई के इन साधनों को बनाने और लगवाने में बहुत मेहनत और धन खर्च होता था। अधिकतर गांव के धनी लोग ही ये साधन जुटा पाते थे। बहुत से किसान बिना सिंचाई के ही खेती किया करते होंगे जैसे कि आज भी करते हैं।

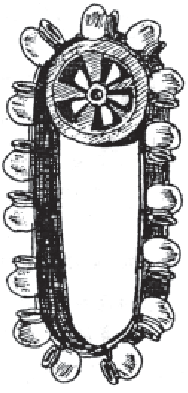

चित्र-6 अरघट्ट

चित्र-1: *कक्षा सातवीं के इतिहास खण्ड के पाठ ‘गाँव ही गाँव, खेत ही खेत’ का एक पेज।*

विधि का उपयोग किया जाता था, उसी का उपयोग बाद में पत्थरों की इमारत बनाने में भी किया जाने लगा। बिना जोड़े एक-दूसरे में फँसाने की विधि! मैंने जब उनसे तलाश करके लाने को कहा कि क्या आज भी इस विधि का उपयोग होता है तो बच्चे अगले ही दिन पता कर आए कि

आज भी गाँव में खटिया, तिपाई, दरवाज़ों की बारसाक (चौखट) जैसी कई चीज़ें बनाने में इसी तरीके का इस्तेमाल होता है। बिना कील वगैरह के जोड़ना! इन उदाहरणों के द्वारा उनकी यह भी समझ बनी कि बहुत सारे कौशल, विधियाँ और तकनीकें जो शुरू के इन्सान ने इजाद किए थे, वे उसी मूल रूप में या थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ आज भी काम में लाए जा रहे हैं। इन सब में, मैं इस बात की समझ बनाने की कोशिश कर रहा था कि ऐतिहासिक विकासक्रम में मनुष्य अपने काम के तरीके किस तरह बदल रहा था, किस तरह पुराने तरीके उन बदलावों की ज़मीन तैयार कर रहे थे और कैसे कुछ पुराने तरीके अब भी चलन में थे।

इतिहास शिक्षण में विविधता की समझ

भारत जैसे महादेश में किसी भी दौर की सामाजिक संरचनाएँ सभी जगह एक-जैसी नहीं हो सकती थीं। उनमें विविधता होनी ही थी। ये विविधताएँ लम्बे विकासक्रम में अस्तित्व में आई थीं। और उनके अपने भौगोलिक-सांस्कृतिक कारण थे जिन्हें जानना आज के बहुत-से धुँधलकों को साफ करने में सहायक हो सकता है। सातवीं के इतिहास में 'उत्तर भारत के गाँव और भोगपति' तथा 'दक्षिण भारत के गाँव' जैसे दो महत्वपूर्ण पाठ इस सिलसिले में काफी सुलभ सामग्री उपलब्ध करवाते थे। उत्तर और दक्षिण के गाँवों की सामाजिक संरचनाएँ, प्रशासकीय प्रबन्धन इत्यादि के फर्क और विशिष्टता को इन पाठों ने बच्चों के स्तर के अनुसार बेहतर ढंग से स्पष्ट किया था। 'एक पुराना शहर सियडोणि' जैसे पाठ में तो 900 साल पुराने शहरों के प्रबन्धन और आर्थिक क्रियाकलापों की बहुत छोटे-छोटे लेकिन रुचिकर ब्यौरों के साथ जानकारी दी गई थी। पूरा पाठ वहाँ मिले एक बड़े शिलालेख में दर्ज जानकारियों के छोटे-छोटे अंशों के साथ आगे बढ़ता है। इसके ज़रिए, उस समय के लोगों के नाम, उनके व्यवसाय और शहर की बसाहट की जानकारी उभरती है। सबसे खास बात यह कि पाठ में उस शहर का खाली नक्शा एक पूरे पेज पर दिया गया था जिसे पाठ में वर्णित जानकारियों के आधार पर भरना था। घर, बाज़ार, मन्दिर, मण्डी इत्यादि दिखाने थे। यह एक बहुत दिलचस्प गतिविधि थी। मुझे खुद इस पाठ पर काम करते वक्त काफी आनन्द आया। बच्चे उस समय के लोगों के नाम पढ़-सुनकर हँसे भी! शहर का खाका उन्होंने अपने ढंग से भरा! मुझसे मदद भी ली! नक्शे में एक-साथ बहुत सारी चीज़ें दिखाई जानी थीं, इस कारण काफी गड्ड-मड्ड भी हुआ।

मानव इतिहास के लम्बे कालखण्ड

में सैकड़ों शहर बने-बिगड़े और बदले। कुछ इतिहास के पन्नों से हमेशा के लिए गायब हो गए। मोहनजोदड़ो या हड़प्पा की तरह। कुछ बदली हुई शक्लों और बदले हुए नामों के साथ अपना अस्तित्व बनाए रहे, जैसे, काशी या उज्जैन! बहरहाल, शहरों का बनना-बिगड़ना और बदलना इतिहास की सामान्य परिघटना रही। इसे स्पष्ट करने के लिए मैंने पुराने शहरों को प्रदर्शित करने वाले एक नक्शे का उपयोग किया। कई शहरों के नाम बदल गए थे। बच्चों के लिए वह नक्शा एक रुचिकर अभ्यास था। उन्हें नक्शे में वे शहर ढूँढने थे जो आज भी हैं। कुछेक के नाम थोड़े-से बदल गए थे। बच्चों ने कई शहर ढूँढ निकाले। इसी तरह उन्होंने एक हज़ार वर्ष पुराने मध्य प्रदेश के नक्शे में भी आज के शहर ढूँढे थे। इनमें भी उन्हें कुछ के नाम बदले हुए मिले।

स्थानीय अनुभवों से सीखना

जैसा कि मैंने पहले ज़िक्र किया, सामाजिक अध्ययन नवाचार की पुस्तकों के कई पाठ मुझे इस बात की गुंजाइश देते थे कि मैं बच्चों को उनके आज के सवालों-समस्याओं से जोड़ूँ, उन पर बात करूँ। इस सिलसिले में मैंने पाया कि सिंचाई उनके लिए एक बड़ा मुद्दा है। 'गाँव ही गाँव, खेत ही खेत' पाठ उनके लिए थोड़ा-सा नया इसलिए था कि वह सिंचाई के उन पुराने तरीकों की जानकारी देता था जो अब काम में लगभग नहीं लाए जाते। मालवा, जो कभी पानी की प्रचुरता के लिए जाना जाता था, अब वैसा नहीं रह गया था। नदियाँ अब पहले की तरह सालभर नहीं बहती थीं। तालाब अब पहले जैसे भरोसे के नहीं रह गए थे। कुएँ बारिशभर के ही साथी थे। यही वक्त था, जब ट्यूबवेल से सिंचाई का चलन तेज़ी-से बढ़ा था। साथ ही, ट्यूबवेल की गहराई भी उसी तेज़ी-से बढ़ती गई थी। भू-जल स्तर लगातार नीचे जा रहा था। अब तो यह समस्या और भी ज़्यादा विकराल हो चुकी है।

बच्चों के खेतों में ज़्यादातर ट्यूबवेल से सिंचाई होती थी। जब तक सुदूर गाँवों तक बिजली नहीं पहुँची थी, सिंचाई के लिए डीज़ल पम्प का उपयोग होता था। बाद में, बिजली के पम्प का होने लगा। हालाँकि, बिजली की सप्लाई में लगातार व्यवधान आते रहने के कारण फसलों को पानी देने में अक्सर दिक्कत होती रहती थी। मालवी में सिंचाई करने को 'पाणत करना' कहते हैं। कई बच्चे इस काम में हाथ बँटाते थे। जब जाना कि पहले अलग-अलग ढंग से सिंचाई (पाणत) होती थी तब उन्होंने पाठ को थोड़ी और जिज्ञासा एवं कुतूहल के साथ पढ़ा।

इसी सिलसिले में मैंने आने वाले समय में पैदा होने वाले पानी के उस भयावह संकट की भी चर्चा की जब

सिंचाई तो क्या, पीने के लिए भी पानी पूरा नहीं मिलेगा। अगर हमने अभी से पानी बचाने के सार्थक उपाय नहीं किए तो! वैज्ञानिक खेती से सम्बन्धित पाठ इस मामले में विशेष सहायक रहा। बच्चे उस पाठ के ज़रिए जान चुके थे और अपने खेतों में देख भी रहे थे कि पारम्परिक खेती से इस नई खेती में पानी ज़्यादा लगता है। मेरे और बच्चों के लिए ये पाठ इसलिए बहुत उपयोगी रहे कि हम लोग सामूहिक रूप से निकट भविष्य में पैदा होने वाले एक बड़े मानवीय संकट पर बात कर पाए।

'समाज में जाति-पाति' जैसा पाठ पढ़ाने के पहले ही मैं थोड़ा-सा तनाव में था। होशंगाबाद कार्यशाला में भी पाठ को लेकर हुई चर्चा में मैंने अपनी आशंका व चिन्ता अपने शिक्षक साथियों और स्रोत शिक्षकों के बीच ज़ाहिर की थी। असल में, गाँवों में जाति काफी संवेदनशील मुद्दा रहा है। आज भी है। कक्षा में जातियों का ज़िक्र निकलने पर मुझे कक्षा के वातावरण के असहज होने का खतरा दिखाई देता था। सुब्बू का कहना था कि बच्चे समस्या को जब तक ठीक से जानेंगे-समझेंगे नहीं तब तक उसे खत्म करने के लिए कैसे तैयार हो पाएँगे! बात सैद्धान्तिक रूप से अपनी जगह ठीक थी लेकिन मेरी आशंका-चिन्ता अपनी जगह बनी हुई थी। बहरहाल, पाठ पढ़ाते हुए मैं एक खास तरह के तनाव में बना रहा। पाठ के जो प्रसंग मुझे ज़्यादा नाज़ुक और संवेदनशील लग रहे थे, उन पर अतिरिक्त रूप से सतर्क रहा। वैसे इस पाठ और इस तरह के अन्य पाठों से बार-बार गुज़रने के बाद मेरी अपनी भी यह समझ बनी कि इस तरह के पाठों का अगली कक्षाओं में सिलसिला बना रहे तो बच्चों के भीतर जाति-धर्म, ऊँच-नीच इत्यादि को लेकर बुनियादी वैज्ञानिक समझ विकसित करने में मदद मिल सकती है!

इतिहास जानने के साधन

एक बार फिर से इस मुद्दे पर लौटना चाहूँगा कि इतिहास को किस तरह जानें। इस सवाल के जवाब में इतिहास जानने के साधनों के सीधे-सीधे उल्लेख से ज़्यादा सही और प्रभावशाली होता है, उन साधनों के ज़रिए इतिहास जानने का तरीका सिखाना! इस नवाचारी सामाजिक अध्ययन के पाठों में यही सिखाने का प्रयत्न किया गया था। इससे रोचकता तो पैदा हुई ही, बच्चों के भीतर एक खास तरह के सीखने का आनन्द भी सृजित हुआ था।

आठवीं के इतिहास का बड़ा हिस्सा मुगल शासकों और अँग्रेज़ों से सम्बन्धित था। हालाँकि, मुगल काल के बारे में जानकारी सामाजिक अध्ययन की प्रचलित पुस्तकों की तरह बादशाहों के क्रमानुसार ही थी। लेकिन नवाचार के पाठों को बादशाह

नहीं बल्कि उनके समय में हुए परिवर्तनों और प्रमुख घटनाओं पर केन्द्रित किया गया था। भारत में मुगलों का आना और फिर अँग्रेज़ों का आना उत्तर-मध्यकाल की दो बड़ी घटनाएँ थीं। दो बड़े परिवर्तन! इतिहास के पाठों में मुगलकालीन भारत के बारे में बहुत सारी बातें उस समय के बने चित्रों द्वारा बताई-समझायी गई थीं। कई तरह के चित्र थे जैसे अजमेर में अकबर, हिन्दू रानी की जचकी, मुगल सेना का रणथम्भोर के किले पर आक्रमण, अमीरों का रहन-सहन, अकबर का दरबार, मुगलकाल के गाँव, शिकार करना, औरंगज़ेब इत्यादि! इन चित्रों को उसी दौर में जगन्नाथ, गोवर्धन इत्यादि जैसे चित्रकारों ने बनाया था। ये चित्र उस समय के पहनावे, रहन-सहन, घर, सामाजिक आचार-व्यवहार वगैरह की जानकारी देते थे। कहना चाहिए कि इतिहास के ये पाठ इसी

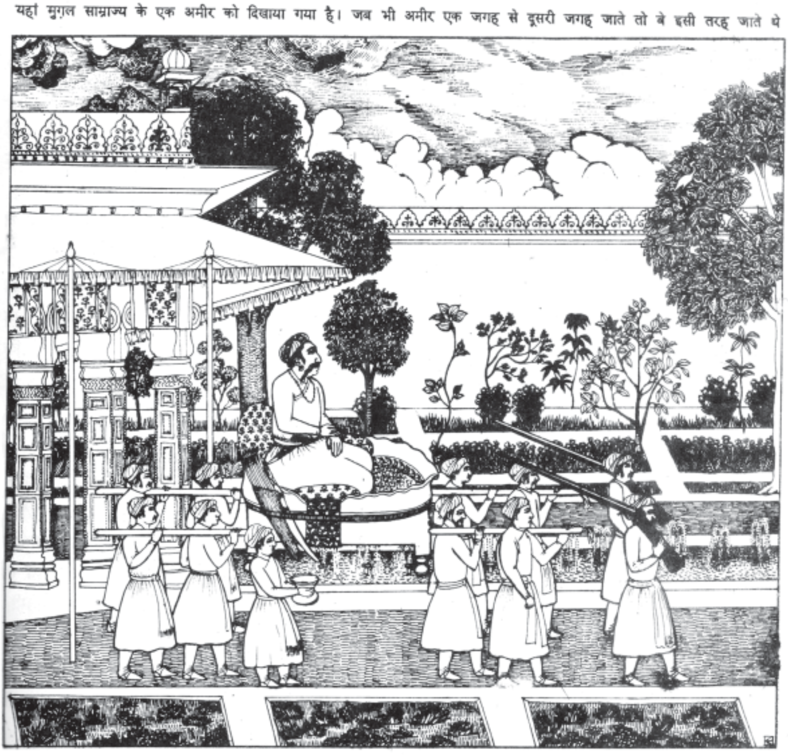

चित्र-2: कक्षा आठवीं के इतिहास खण्ड के पाठ 'मुगल साम्राज्य के अमीर' का एक पेज।

पद्धति पर तैयार किए गए थे। बच्चों ने इन चित्रों की मदद से काफी कुछ पता किया। इस काम के दौरान कक्षा में काफी हो-हल्ला रहा। हँसी-मज़ाक, हलचल, जिज्ञासा, आश्चर्य! एक-दूसरे की टाँग-खिंचाई! सीखने व काम करने का एक उत्तेजना भरा ऐसा वातावरण जो सीखने को आनन्दमय बना दे!

वैसे गाँवों के बारे में बच्चे छठी कक्षा से पढ़ रहे थे। छठी कक्षा में उन्होंने गाँव बसने और बिलकुल शुरुआत के गाँवों के बारे में पढ़ा था। सातवीं में आकर उन्होंने लगभग हज़ार साल पहले के गाँवों के बारे में जाना-समझा, आठवीं में मुगलकालीन और अँग्रेज़ों के आने के बाद के गाँवों के बारे में जो तुलनात्मक रूप से थोड़े-से विकसित गाँव थे। नगरों में भी बड़ा परिवर्तन आ चुका था।

आठवीं के इतिहास में नक्शों का अगला विस्तार था। वे बादशाहों के साम्राज्य का फैलाव तो बता ही रहे थे, इसके अलावा उत्तर-मध्यकाल में हिन्द महासागर के ज़रिए होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की भी जानकारी दे रहे थे। ऐसे नक्शों के ज़रिए बच्चों ने पूर्व और दक्षिण एशिया के अफ्रीका और यूरोप महाद्वीप से होने वाले आयात-निर्यात के सामान की सूची बनाई थी। जल-मार्ग में पड़ने वाले बन्दरगाहों के नाम और पुर्तगालियों के किलों को तालिका में दर्ज किया था। पता किया था कि सन् 1857 में अँग्रेज़ों का शासन भारत के आज के किन-किन प्रान्तों में फैला हुआ था। इसके लिए उन्होंने सामाजिक अध्ययन में दिए नक्शे के साथ एटलस में दिए भारत के राजनैतिक नक्शे का उपयोग किया था। एक तरह से नक्शों के माध्यम से इतिहास पढ़ने-समझने की जो शुरुआत छठी कक्षा से हुई थी, वह आठवीं तक आकर काफी विकसित हुई। मुझे लगता है कि अगर अगली कक्षाओं में भी बच्चों को इतिहास के पाठ इस तरह से पढ़ने-पढ़ाने को मिलें तो उनकी समझ और बेहतर हो सकती है।

प्रकाश कान्त: हिन्दी से एम.ए. और रांगेय राघव के उपन्यासों पर पीएच.डी. की है। शीर्ष पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ एवं आलेख प्रकाशित। चार उपन्यास – अब और नहीं, मक्तल, अधूरे सूर्यों के सत्य, ये दाग-दाग उजाला; कार्ल मार्क्स के जीवन एवं विचारों पर एक पुस्तक; तीन कहानी संग्रह – शहर की आखिरी चिड़िया, टोकनी भर दुनिया, अपने हिस्से का आकाश, संस्मरण – एक शहर देवास, कवि नईम और मैं, और फिल्म पर एक पुस्तक – हिंदी सिनेमा: सार्थकता की तलाश प्रकाशित हो चुकी हैं। लगभग 30 वर्षों तक ग्रामीण शालाओं में अध्यापन।

सभी चित्र: *एकलव्य* द्वारा विकसित सामाजिक अध्ययन, म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम से साभार।

यह लेख *एकलव्य* द्वारा प्रकाशित पुस्तक *सामाजिक अध्ययन नवाचार* से साभार।